सितम्बर 2017 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

• पर्यूषण पर्व पर प्रवचन करते हुए पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज

साथ में हैं शिष्य योगी अरुण तिवारी

• हजारों की संख्या में उपस्थित श्रोताओं का विहंगम दृश्य

स्थान : जैन सेंटर, मिल्पीटस, कैलिफोर्नियां, अमेरिका

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

जैसी होगी हमारी ग्रहण-दृष्टि वैसी ही होगी हमारी यह सृष्टि

नींद अगर नहीं आती हो तो वह चिंता का कारण बन जाती है। मन में तरह-तरह की नेगेटिव सोच आने लगती है। हम समझ नहीं पाते हैं कि 'जागना' एक अवसर है जिसका बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है। उस समय अगर आप सकारात्मक ढंग से खुद को देखने की कोशिश करेंगे तो पाएंगे वह सोच मां की लोरी में तब्दील होती जा रही है। 05

एक नया समाज

आदर्श समाज का चौथा सूत्र है- मिथ्या मानदंड और अर्थ-शून्य मूल्यांकनों का परिहार। जाति से व्यक्ति न बड़ा होता है और न छोटा। अर्थ से व्यक्ति महान् नहीं बनता और न गरीबी से हीन। स्वयं कार्य करने से छोटा नहीं होता और नौकरों द्वारा कार्य करवाने से प्रतिष्ठित नहीं होता। सुन्दरता कोई मौलिक तत्त्व नहीं है, कालापन गंवारपन नहीं है। ये मानदण्ड जिस समाज में विकसित हो जाएंगे, वह समाज सर्वोत्कृष्ट होगा। 08

मौन क्यों रह गए बुद्ध और राम

गौतम बुद्ध तब भागे जब उनकी पत्नी यशोधरा नवजात शिशु की मां थी। राम ने सीता का त्याग तब किया जब सीता गर्भवती थी। कुंती ने जब सूर्य से कहा कि 'आपके प्रेम का प्रताप मेरे गर्भ में पल रहा है' तो सूर्य बादलों में छुप गए। फिर भी बुद्ध 'भगवान' कहलाए और राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम'। 17

व्यापारी से आदर्श राजा

राजा बने के बाद रामेश्वर ने पहला कार्य उसे दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा करने का किया। उसने देखा, वह क्षेत्र सचमुच भयानक है। उसने उसे साफ करने का आदेश दिया। हजारों सैनिक और अन्य कर्मचारी वन को साफ करने लगे। सड़कों के किनारों पर खुले स्थानों में सुंदर-सुंदर भवनों का निर्माण किया जाने लगा। वहां सुंदर उद्यान बनाए जाने लगे। पहाड़ी पर बने मंदिर तक सीढ़ियां बनवाई गईं। मंदिर की मरम्मत कराकर उसे भव्य रूप दिया गया। 21

संत-वाणी

कबीरा तेरी झोंपड़ी, गलकट्टन के पास।
करेगा सो भरेगा, तू क्यों भया उदास।।

बोध-कथा

गायब हुए भगवान

आखेट की खोज में भटकता विश्वबंधु शवर नील पर्वत की एक गुफा में जा पहुंचा। वहां भगवान नील-माधव की मूर्ति के दर्शन पाते ही शवर के हृदय में भक्ति-भावना का स्रोत उमड़ पड़ा और उनका हृदय परिवर्तित हो गया। उन्होंने हिंसा तत्काल छोड़ दी और भगवान नील माधव की दिन-रात पूजा करने लगे। उन्हीं दिनों मालव राजा इंद्र प्रद्युम्न किसी अपरिचित तीर्थ में मंदिर बनवाना चाहते थे। उन्होंने अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने के उद्देश्य से स्थान की खोज के लिए अपने मंत्री विद्यापति को भेजा। विद्यापति ने वापस जाकर राजा को नील पर्वत पर शवर विश्वबंधु द्वारा पूजित भगवान नील माधव की मूर्ति की सूचना दी। यह सुनते ही राजा तुरंत मंदिर बनवाने के लिए वहां पहुंचा। किंतु घोर आश्चर्य! मूर्ति वहां नहीं थी। राजा ने क्रोधित होकर कहा- 'विद्यापति तुमने व्यर्थ ही हमारा समय नष्ट किया है। यहां तो मूर्ति ही नहीं है।' विद्यापति ने कहा- 'महाराज मैंने स्वयं अपनी आंखों से इसी गुफा में भगवान नील माधव की मूर्ति देखी है। अवश्य ही कोई ऐसी बात हुई है, जिससे भगवान की मूर्ति अंतर्धान हो गई है। राजन्! यह बताइए कि यहां आते समय आप क्या सोचते हुए आए हैं? राजा इंद्र प्रद्युम्न ने बताया कि 'मैं सारे रास्ते केवल इतना ही सोचता आया हूं कि अपने स्पर्श से भगवान की मूर्ति को अपवित्र करने वाले शवर को सबसे पहले भगा दूंगा और कोई अच्छा पुजारी नियुक्त कर दूंगा।' विद्यापति ने बड़ी नम्रता से कहा कि आपकी इसी भेद भावना के कारण ही भगवान रुष्ट होकर चले गए हैं। समदर्शी भगवान जात-पात नहीं बल्कि सदैव हृदय की सच्ची निष्ठा ही देखते हैं। बात समझ में आते ही राजा को अपनी भूल का अहसास हो गया। उसने भगवान से क्षमा मांगी और उनकी स्तुति की। तब उसी स्थान पर प्रसिद्ध जगन्नाथ जी मंदिर की स्थापना कराई।

ऊब पैदा होती है बुद्धि के साथ

बर्ट्रेन्ड रसेल ने अपने एक वक्तव्य में ठीक यही बात कही है। रसेल ने कहा है कि मैं हिन्दुओं के मोक्ष से बहुत डरता हूं। मुझे सोचकर ही बात भयावनी मालूम पड़ती है। सच में है। आपने सोचा नहीं कभी, इसलिए फिक्र नहीं है। रसेल कहता है कि मैं यह सोचकर ही बहुत भयभीत हो जाता हूं कि मोक्ष मिल जाएगा, तो फिर क्या? देन व्हाट? और बड़ी कठिनाई यह है कि मोक्ष से संसार में वापस नहीं आ सकते। संसार से तो मोक्ष में जा सकते हैं। एक्ट्रेन्स तो है, एक्जिट नहीं है। मोक्ष से वापिस नहीं लौट सकते, वहां से कोई दरवाजा नहीं कि जिसमें से निकल भागें, बाहर आ जाएं।

तो रसेल कहता है कि मोक्ष की बात ही घबड़ाती है कि वहां न दुख होगा, न सुख होगा- परम शांति होगी! लेकिन कितनी देर? अनन्त काल तक! अनन्त काल तक शांति, शांन्ति, शान्ति, बहुत बोर्डम, बहुत ऊब पैदा हो जाएगी। स्वाद में थोड़ी बदलाहट तो चाहिए ही आदमी को। थोड़ा दुख आता है, तो सुख में फिर मजा आ जाता है। थोड़ी अशान्ति होती है, तो शान्ति की फिर चाह पैदा हो जाती है। लेकिन वहां कोई विघ्न बाधा ही न होगी, वहां एक-सुरा संगीत होगा, जिसमें कभी ऊंची-नीची ताल न होगी। वहां 'स रे ग म प ध नि' नहीं होगा। वहां बस 'स' तो 'स', स, स, स, स, चलता रहेगा अनन्त काल तक उसमें। रसेल कहता है घबड़ा जाएगी तबीयत और निकलने का रास्ता नहीं है। और यहां तो प्रभु से प्रार्थना करते थे कि मोक्ष पहुंचा दो, फिर क्या करंगे? मोक्ष के बाद फिर कोई उपाय नहीं है। तो रसेल कहता है, इससे तो नरक ही बेहतर है, उसमें से कम से कम बाहर तो आ सकते हैं, और कम से कम कुछ मजा तो रहेगा, कुछ चीजें तो बदलेंगी। फिर संसार ही क्या बुरा है?

यह रसेल ठीक कहता है। अगर सोचेंगे तो घबड़ाहट होगी। लेकिन ऐसा नहीं है कि बुद्ध और महावीर और कृष्ण ने बिना सोचे यह बात कही है। अगर आप अपनी बुद्धि को लेकर मोक्ष में चले जाएंगे, तो वही होगा, जो रसेल कह रहा था। क्योंकि बुद्धि द्वंद्व है। वह एक को नहीं सह सकती, उसको दो चाहिए। लेकिन मोक्ष की अनिवार्य शर्त है बुद्धि को दरवाजे पर छोड़ जाना। इसलिए वहां कोई कभी नहीं ऊबता।

क्योंकि ऊब पैदा होती है बुद्धि के साथ। बुद्धि तो न करने लगती है- जो था, जो होगा, उसमें तौलने लगती है, तो फिर भेद अनुभव होने लगता है। फिर कल भी यही भोजन मिला, आज भी यही मिला, परसों भी यही मिला, तो ऊब पैदा होने लगती है। भैंस को पता ही नहीं कि कल भी यही भोजन किया था। कल समाप्त हो गया। कल तो, बुद्धि संग्रहीत करती है, बुद्धि स्मृति बनाती है। भैंस जो भोजन कर रही, वह नया ही है। कल जो किया था, वह तो खो ही गया, उसका कोई स्मरण नहीं। कल जो होगा, उसकी कोई खबर नहीं है, आज काफी है। इसलिए बुद्धि के नीचे भी बोर्डम नहीं है। कोई जानवर ऊबा हुआ नहीं है। जानवर बड़े प्रसन्न हैं। कोई आदमी के पार गया आदमी, बुद्ध, महावीर, ऊबे हुए नहीं हैं। उनकी प्रसन्नता फिर प्रसन्नता है। क्योंकि जो बुद्धि हिसाब रखती थी, उसको वे पीछे छोड़ आए।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

○ रुचि आनंद

<u>इंतजार में बस उतना मिलता है</u>
<u>जितना कोशिश से छूट जाता है</u>

एक अवसादग्रस्त व्यक्ति से अचानक मुलाकात हो गयी। उसका बिजनेस चौपट हो गया था और कर्ज के नीचे दब गया था। सबकी नजरों में वह नाकारा बन चुका था। उसकी तकलीफ आर्थिक-बर्बादी से ज्यादा अपनों से मिल रही उपेक्षा से थी। उसने अपनी व्यथा विस्तार से सुनाते हुए कहा कि वह अब एक पल भी जीना नहीं चाहता है। मैंने उसे मुस्कुरा कर देखा तो उसकी आंखों में हताशा का दुःख और भी उभर आया। उसे लगा कि या तो उसे गंभीरता से नहीं ले रहा हूं या फिर मैं भी उसका उपहास उड़ा रहा हूं। लेकिन डेढ़-दो घंटे की बातचीत में निरीहता के साथ उसे जितना गुबार निकालना था, निकाल गया। मुझे भी जो बताना था, बता दिया। जब वह जाने के लिए उठा तो उसके चेहरे पर विश्वास की हल्की उम्मीद आ गयी थी। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि खुद का अंत कोई समाधान नहीं है, जीने की इच्छा को हमेशा संभाल कर रखना चाहिए ताकि मुश्किलों को जगह बनाने में मुश्किल हो जाए। हमें मुश्किल समय में अपनी उपलब्धियों को याद करने की आदत डालनी चाहिए क्योंकि इसके पीछे अनुभवों का भण्डार छिपा होता है। वे खट्टे भी होते हैं और मीठे भी। उसमें संघर्ष भी होता है और सफलता भी। दुःख के साथ सुख भी। उन सारे क्षणों को अपने दिमाग में जोड़कर एक फिल्म बना लें और समय-समय पर उसे प्ले करते रहें। यह तरीका आपका हौंसला बढ़ाएगा और नीचे गिरने से रोकेगा।

एक चीज को याद रखना होगा कि कुछ भी करेंगे तो गलतियां होंगी ही। लेकिन उससे डरना नहीं है। गलतियां तो मानवीय स्वभाव है। विज्ञान गलतियां करते-करते ही आज इस ऊंचाई तक पहुंचा है। प्रयोग एक

बार में पूरा नहीं होता है। यह लगातार की प्रक्रिया है। अब तक के सबसे कामयाब बास्केट बाल खिलाड़ी माइकल जॉर्डन ने स्वीकार किया कि 'मैं अपनी जिंदगी में बार-बार असफल हुआ हूं, इसलिए मैं सफल होता रहा हूं।' यह है उनका आत्मविश्वास। व्यक्तित्व की सबसे बड़ी चाभी।

इसलिए दिमाग को क्रियाशील रखना चाहिए। जब दिमाग कमजोर होता है, तब परिस्थितियां समस्या बन जाती हैं और जब दिमाग स्थिर होता है तब परिस्थितियां अवसर बन जाती हैं। सफल हस्तियों की गतिविधियों को ध्यान से देखिये और उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाइये। वहां तक पहुंचने की कोशिश कीजिये। सच्ची लगन से की जाने वाली कोशिश हमेशा कामयाब होती है। एक बार चन्द्रगुप्त ने कहा कि 'किस्मत पहले ही लिखी जा चुकी है, कोशिश करने से क्या होगा? तो चाणक्य ने जवाब दिया था, 'क्या पता किस्मत में लिखा हो कि कोशिश से ही मिलेगा।' आत्मविश्वास और सफलता, दोनों ही कोशिश करने वालों के लिए है, न कि इंतजार करने वालों के लिए। कलाम साहब ने फरमाया है, 'इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।'

जैसी होगी हमारी ग्रहण-दृष्टि वैसी ही होगी हमारी यह सृष्टि

अगर हम जीवन के हर दिन के पन्ने को रात में बिस्तर पर जाने से पहले पलटें और उसका विवेचन करें तो अनुभवों का एक पूरा संसार दिखाई देगा। मुश्किल यह है कि हम नींद को लाने के प्रयास में उस संसार को देखने से चूक जाते हैं। नींद अगर नहीं आती हो तो वह चिंता का कारण बन जाती है। मन में तरह-तरह की नेगेटिव सोच आने लगती है। हम समझ नहीं पाते हैं कि 'जागना' एक अवसर है जिसका बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है। उस समय अगर आप सकारात्मक ढंग से खुद को देखने की कोशिश करेंगे तो पाएंगे वह सोच मां की लोरी में तब्दील होती जा रही है।

यह जो पॉजिटिव सोच है, वही आदमी का मददगार बनती है। राजा जनक के दरबार में जब श्री राम शिव-धनुष को प्रत्यंचा पर चढ़ा रहे थे तब वहां उपस्थित लोग अपने-अपने ढंग से राम को देख रहे थे। शायद ही किसी को भरोसा था कि यह किशोर धनुष को तोड़ पाएगा। कुछ राजागण उनमें बचपना देखकर हंस रहे थे। अकेली सीता थीं जिनके हृदय में राम का ज्योतिर्मय भागवत-स्वरूप अवतरित हो रहा था। इन्हीं विविध दृष्टियों का आकलन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है,

'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।' सीता की दृष्टि सही थी, इसलिए परिणाम भी वैसा ही आया। महावीर इसे ही सम्यग-दर्शन कहते हैं। इसका सीधा अर्थ है कि दृष्टि सही हो। दृष्टि सही होने से ही ज्ञान सही होता है। सीता जी को अंतर्ज्ञान हो चुका था कि श्री राम ही धनुष तोड़ेंगे।

बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों, मनीषी-चिंतकों ने इस जीवन और जगत की बड़ी-बड़ी व्याख्याएं दी हैं। किंतु संक्षेप में अगर इसे समझना चाहें तो कहा जा सकता है कि यह जीवन वैसा ही है, जैसा इसे हम जीते हैं और जैसा देखते हैं। एक काम किसी में झुंझलाहट पैदा करता है तो किसी को सुख से सराबोर कर देता है। काम एक ही है, लेकिन उसे देखने के नजरिए में फर्क है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे किस रूप में लेते हैं। अगर हम जीवन और जगत को आनंदमय देखते हैं तो सर्वत्र आनंद ही आनंद मिलेगा। अगर दुखमय और यातनापूर्ण देखते हैं तो सर्वत्र दुःख ही दुःख और यातनापूर्ण मिलेगा। यहां प्रश्न यह नहीं है कि कैसा है जीवन और जगत? प्रश्न यह है कि कैसी है हमारी ग्रहण-दृष्टि। यह सृष्टि भी हमारे लिए वैसी ही होगी। सिर्फ आपको अपने अंदर टटोलना होगा।

हमारे अंदर ही है राम और रावण, कृष्ण और कंस, जीसस और जुडास, महावीर और गोशालक। जब भीतर का शैतान जागता है तो रावण, कंस, गोशालक और जुडास जाग जाते हैं। जब भीतर का भगवान् जागता है तो राम, कृष्ण, महावीर और जीसस जाग जाते हैं। किसे जगाना है, यह हमारी दृष्टि पर निर्भर है।

कविता

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

पराया देश चाहे कितना ही विशेष होता है,
पर हमारे लिये वह सिर्फ विदेश होता है,
माटी की महक कभी नहीं मिलती है कंचन में,
अपना देश आखिर अपना ही देश होता है।

एक नया समाज

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

आज का मानव जिस समाज में सांस ले रहा है, उससे वह संतुष्ट नहीं है। क्योंकि वहां सुख तो है, आनन्द नहीं। सुविधा तो है, शान्ति नहीं।

सुख और आनन्द में बहुत बड़ा अन्तर है। शान्ति और सुविधा भिन्न कोणाश्रित तथ्य हैं। सुख और सुविधा बाह्य वस्तु-सापेक्ष तथ्य हैं, आनन्द ओर शान्ति वस्तु-निरपेक्ष स्थिति है।

आज के उत्पादन-बहुल युग में वस्तुओं की कमी नहीं है। प्रायः सभी देशों में पर्याप्त सुविधा-सामग्री है। फिर भी चैन नहीं है। जिनके पास अधिक सामग्री है, वे भी दुःखी हैं और जिनके पास पर्याप्त किन्तु औरों से कम साधन-सामग्री है, वे भी दुखी हैं।

भगवान् महावीर ने साधना-सम्पन्न और साधना-विपन्न व्यक्तियों का चित्रण करते हुए, एक बहुत ही मार्मिक सूत्र दिया है।

'अद्धाविसंता अदुवापमत्ता' यानी आर्त अर्थात् अभाव-ग्रस्त और प्रमत्त अर्थात् अति सम्पन्न दोनों ही तरह के व्यक्ति अति-संक्लेश का जीवन जीते हैं। इस बीमारी से मुक्त समाज की रचना अगर करनी है, तो वह समाज आज के इस समाज से सर्वथा विलक्षण होगा।

वह समाज संग्रह-मुक्त समाज होगा। उसका आदर्श होगा- विसर्जन। वह समाज अर्थ को जीवन-यापन का साधन मानेगा, साध्य नहीं। अनावश्यक संग्रह में लिप्त नहीं होगा। संग्रह को जीवन के लिए भार-स्वरूप मानेगा।

उस समाज का दूसरा सूत्र होगा- शोषण-मुक्त समाज। आवश्यक संग्रह भी शोषण-जनित नहीं होगा। श्रम किसी का, सुविधा किसी को- ऐसा क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं होगा।

तीसरा सूत्र होगा- व्यसन-मुक्त समाज। वह समाज जीवन-निर्वाह की आवश्यक सामग्री को व्यसनों में नष्ट नहीं

करेगा। क्षणिक तृष्ति के लिए असीम दुःख को निमंत्रण नहीं देगा। इन्द्रियों को तृप्ति देकर आत्मा का हनन नहीं करेगा।

आदर्श समाज का चौथा सूत्र है- मिथ्या मानदंड और अर्थ-शून्य मूल्यांकनों का परिहार। जाति से व्यक्ति न बड़ा होता है और न छोटा। अर्थ से व्यक्ति महान् नहीं बनता और न गरीबी से हीन। स्वयं कार्य करने से छोटा नहीं होता और नौकरों द्वारा कार्य करवाने से प्रतिष्ठित नहीं होता। सुन्दरता कोई मौलिक तत्त्व नहीं है, कालापन गंवारपन नहीं है। ये मानदण्ड जिस समाज में विकसित हो जाएंगे, वह समाज सर्वोत्कृष्ट होगा।

इस नवीन समाज का पांचवा सूत्र है- प्रदर्शन-मुक्त समाज। उस समाज में जन्म, शादी और मौत के अवसर पर किसी तरह का प्रदर्शन नहीं होगा। सीधा-सादा जीवन ओर सात्विक विचार ही उस समाज की नींव होगी। त्योहार, पर्व ओर उत्सव भी सादगीपूर्ण होंगे। प्रदर्शन खोखलेपन का प्रतीक माना जाएगा।

उस समाज का छठा सूत्र रूढ़ि-मुक्तता भी रहेगा। रूढ़ि-मुक्त समाज सदा चेतना का ऊर्ध्वारोहण करता रहता है। वह सड़ी-गली अर्थ-शून्य परम्पराओं से चिपका नहीं रहता है। कृतार्थ हुई पुण्य परम्पराओं को भी छोड़ देता है। आवश्यक नवीनता को आत्मसात् करने में कोई झिझक नहीं होती।

उस उन्मुक्त समाज का सातवां सूत्र है- अर्थ सत्ता-शक्ति के उन्माद से मुक्ति। जहां अर्थ का उन्माद नहीं होगा, सत्ता की निरंकुशता नहीं होगी, शक्ति का दुरुपयोग नहीं होगा- उस समाज में विद्रोह, विघटन और वैमनस्य का प्रश्न ही नहीं उठेगा। यह है भगवान् महावीर की कल्पना का समाज जिसे एक दृष्टि से धर्म-शासन भी कहा जाता है। ऐसे समाज में सर्तत्र समता का साम्राज्य होगा।

ऐसे आदर्श समाज की रचना पुरुष लोग नहीं कर सके। अब आज के शक्ति-सम्पन्न महिला-समाज से आशा की जा रही है कि वे अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्यों में जोड़ें, ताकि जो मौलिक कार्य पुरुष न कर सका, उसका श्रेय नारी को मिले।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

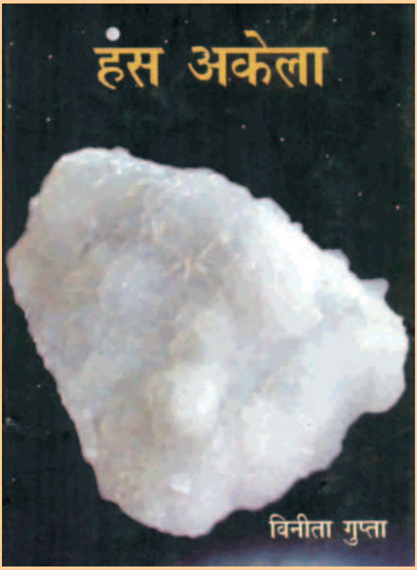

गतांक से आगे-

शाम को भी रूपा ने थाली लौटा दी। माँ के बहुत कहने पर दो रोटी और दो केले खा लिये। दो दिन ऐसे ही गुजर गये। रूपा ने खाने के नाम पर रोटी और केले ही खाये। जयचंदलाल के कानों तक रूपा की इस नयी सनक की बात पहुँच गई। वे खासे नाराज थे। दोपहर को जल्दी घर लौटे, ताकि रूपा की सनक चूल्हे में झोंकी जा सके। संयोग से रूपा उस समय खाना खा रहा था। उसकी थाली में एक केला और दो रोटियां रखी हुई थीं। वे सीधे वहीं पहुँचे। अपने गुस्से को पीते हुए सहज होकर बोले-

'रूपा तू बाकी सब्जी-दाल क्यों नहीं खा रहा? ऐसे तो तू कमजोर हो जाएगा।' रूपा एकबारगी सकपकाया। फिर बिना कोई उत्तर दिये उसने अपने भोजन के क्रम को आगे बढ़ाया। रूपा से कोई उत्तर न पाकर जयचंदलाल की त्यौरियाँ चढ़ने लगीं। इस बार उन्होंने थोड़ा ऊँची आवाज में कहा-

'मैंने तुझसे कुछ पूछा है, तू जवाब क्यों नहीं देता? ये सारा नाटक किसलिए है, मैं जानता हूं। लेकिन याद रख तेरी ये नौटंकी ज्यादा नहीं चलेगी।'

इस बार रूपा बोला, 'पिताजी जब तक आप मुझे दीक्षा के लिए अनुमति नहीं देते। मैं भोजन में सिर्फ ये दो चीजें ही लूंगा, रोटी और केला। यही मेरा संकल्प है।'

जयचंदलाल की आवाज इस बार गुस्से में और भी तल्ख हो गई थी- 'संकल्प ले रहा है। दीक्षा लेगा। मालूम है संत जीवन क्या होता है? क्या-क्या छोड़ना पड़ता है? और जो ये तू सिर्फ रोटी और केले खाने की बात कर रहा है। याद रख ऐसी नौटंकियों का मेरे ऊपर कोई असर होने

वाला नहीं। रोटी और केले मिल जाएं, फिर दूसरी चीज खाने की जरूरत ही क्या है? मौज ही मौज। इससे अच्छी तरह जिंदगी काटी जा सकती है।'

रूपा ने और कुछ सुनना या उत्तर देना उचित नहीं समझा। झटपट थाली खाली कर उठा और दूसरे कमरे में चला गया। इस प्रकार अपनी उपेक्षा पर जयचंदलाल नाराज थे। रूपा को पिता जी की बात भीतर तक चुभ गई थी कि रोटी और केले मिल जाएं तो और क्या चाहिए? मौज ही मौज! क्या अगर वह कुछ भी न खाये तब पिता जी को बात समझ आएगी? रूपा की उधेड़बुन और तेज हो गई। पाँची देवी और शुभकरण के बहुत कहने के बावजूद उसने कुछ नहीं खाया।

सुबह उठा तो भूख लग रही थी। पाँची देवी ने खाने के लिए कहा तो मना कर दिया। विद्यालय से लौटा। इस बार माँ के बहुत कहने पर फिर रोटी और केले ही खाये। रूपा के कारण घर का वातावरण तनावपूर्ण हो चला था। माँ होते हुए भी पाँची देवी का मन नियति को स्वीकार चुका था कि रूपा का जीवन-पथ सांसारिक नहीं, संन्यास का है। जयचंदलाल इस बात को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं थे। वे उसे संन्यासी जीवन की कठिनाइयों और नियमों का आभास दिला चुके थे, लेकिन रूपा संकल्प से डिगने को तैयार नहीं था।

एक दिन घर में घमासान के बाद रूपा ने पूरी तरह खाना छोड़ दिया।

'देखते हैं कितने दिन तक खाना नहीं खाएगा?' जयचंदलाल ने तेरह वर्षीय बालक के सामने चुनौती फेंकी।

ये रूपा के लिए संन्यासी जीवन के बिना ही तपने और अपने आपको परखने के दिन थे। बाल-मन संन्यास-पथ की विकटताओं को नहीं जानता था।

लेकिन वह जीवन में धवलता की ओर जाना चाहता था। संकल्प की आभा उसके मुखमंडल पर झलकने लगी थी। उसे भोजन किये बिना आज तीसरा दिन था। जयचंदलाल दोपहर को घर आए। उन्होंने सोच लिया था कि आज रूपा के सिर से वे दीक्षा का भूत उतार कर रहेंगे। वे पाँची देवी के पास पहुँचे- 'रूपा ने अब तक कुछ खाया या नहीं? उसका पागलपन उतरा या नहीं?' एक ही साँस में उन्होंने दो प्रश्न पूछ लिए।

'देखिए, आज तीसरा दिन है, रूपा ने सिर्फ पानी पिया है। कुछ भी नहीं खा रहा। आप उसे दीक्षा की अनुमति क्यों नहीं दे देते?' पाँची देवी ने कहा।

'क्या हँसी मजाक है संन्यासी होना? अभी इसकी उम्र ही क्या है। कुल तेरह बरस। इसने दुनिया ही कितनी देखी है। ये

सोचता है अपनी जिद से सही-गलत सब कुछ मनवा लेगा। हर्गिज नहीं। पागल हो गया पागल! है कहां वो? अभी कहीं घूम रहा है?'

जयचंदलाल तमतमाए हुए थे।

'रूपा...,रूपा...'

रूपा जानता था कि अब क्या होने वाला है? लेकिन वह अपने संकल्प के लिए कुछ भी सहने को तैयार था। वह पिता के सामने पहुँचा। उसके चेहरे पर दृढ़ संकल्प की आभा थी। भूखे रहने के बावजूद मुख मलिन नहीं हुआ था।

'जी, पिता जी'... रूपा ने धीरे से कहा।

'रूपा, ये जिद छोड़ो। खाना खाओ। तुम अपना भविष्य नहीं देख पा रहे हो। दीक्षा लेकर क्या करोगे? अपना व्यापार इतना फैला हुआ है। उसे संभालना है तुम्हें। किस चीज की कमी है तुम्हारे लिए घर में? तुम क्यों संन्यास लेना चाहते हो?' जयचंदलाल के प्रश्नों के उत्तर में रूपा ने फिर अपना संकल्प दोहरा दिया जो उसने आचार्यश्री तुलसी के समक्ष रखा था-

'पिता जी, मैं देखता हूं, इस संसार में रहते हुए कितना झूठ बोलना पड़ता है। छल करना पड़ता है। मुनि बन जाऊंगा तो इस सब प्रपंच से दूर रहूंगा। मेरा मन इस सबमें नहीं लगता। पिता जी, आप मुझे संन्यास दीक्षा की अनुमति दें।' रूपा ने शांत भाव से उत्तर दिया।

'जानते हो एक संन्यासी को कितने कठिन व्रतों-नियमों का पालन करना पड़ता है पूरी उम्र? तुम्हारी अभी उम्र ही क्या है। निरा बचपना है। खेलने-खाने की उम्र है, न कि नियमों का पालन करने की।' जयचंदलाल रूपा को समझाने का प्रयास कर रहे थे- 'और मैंने देख लिया तुम्हारे वश का नहीं, किसी नियम का पालन करना।'

'पिता जी मैं नियमों का पालन करना जानता हूँ।' रूपा ने उत्तर दिया।

'हुं, नियमों का पालन करना जानता है। तभी तो पतंग न उड़ाने का नियम लेने के बावजूद उसका कितना पालन कर सका? मुझे मालूम है, तूने अब फिर पतंग उड़ाना शुरू कर दिया है।' रूपा जवाब देने को तैयार था।

'पिता जी, जो नियम जबरन दिलवाये जाते हैं या थोपे जाते हैं, उनका पालन करना मुश्किल होता है। लेकिन जब हम अपने आप ही कोई संकल्प लेते हैं तो उसे जीवन भर निभाना कोई मुश्किल नहीं होता। पतंग न उड़ाने का नियम आपने मुझे जबर्दस्ती दिलवाया था। जब तक बन पड़ा मैं मन-मसोस कर उसे निभाता रहा...।' एक घड़ी की चुप्पी के बाद रूपा फिर दृढ़ता से बोला-

'लेकिन, जब मैं अपनी इच्छा से नियम लूँगा तो विश्वास कीजिए अंतिम साँस तक निभाऊंगा। मैंने संन्यास-पथ पर जाने का संकल्प ले लिया है। वही मेरा जीवन है, वही लक्ष्य। मुझे घर-बार, संसार कुछ भी नहीं चाहिए।... जब तक आप अनुमति नहीं देंगे। मैं कुछ नहीं खाऊंगा।'

रूपा की दृढ़ता देख जयचंदलाल हैरान थे। लेकिन उसकी जिद देखकर उनका पारा चढ़ता जा रहा था।

'कुछ नहीं खाएगा, कुछ नहीं खाएगा।' एक तमाचा उन्होंने रूपा के गाल पर जड़ दिया। उसे खींच कर भीतर वाले कमरे में ले गए। बाहर से दरवाजे की कुंडी लगाते हुए बोले, 'अब देखता हूं तू कहाँ जाएगा।'

क्षणभर के लिए तमाचे का असर रूपा के गालों पर अवश्य दिखाई दिया। गाल लाल हो गया था, लेकिन इस तमाचे ने उसके संकल्प को और भी दृढ़ कर दिया था। रूपा शांत भाव से कमरे के फर्श पर बैठा रहा। कोई खिड़की न होने की वजह से वह आसमान नहीं देख पा रहा था। कमरे की छत ही अब उसका आसमान थी। उसके मन में पिता जी के प्रति कोई रोष नहीं था। वह सिर्फ अपने लक्ष्य को देख रहा था। वह नहीं जानता था कि संन्यासी बनने के बाद जीवन कैसा होता है? लेकिन उसे ऐसा ही जीवन अपना अंतिम लक्ष्य दिखाई दे रहा था। रूपा ने आँखें मूँद लीं। उसकी आँखों के आगे वर्तुलाकार प्रकाश छाने लगा था। अंधेरे कमरे में उसे अद्‌भुत प्रकाश के दर्शन हुए। यही, यही तो उसका अंतिम लक्ष्य है। क्या यह प्रकाश सदैव उसके साथ रहेगा? प्रकाश...प्रकाश... प्रकाश... अचानक कमरे का दरवाजा खुलता है। रूपा के चारों ओर छाए प्रकाश का वर्तुल धीरे-धीरे बिखरने लगता है।

'अब तो तुम्हारे होश ठिकाने आ गए होंगे?' जयचंदलाल के प्रश्न से प्रकाश पूरी तरह बिखर गया। रूपा का चेहरा एकदम शांत था। प्रकाश की तेजस्विता उसके मुखमंण्डल पर आभासित थी।

जयचंदलाल समझ गए थे कि रूपा को उसके संकल्प से डिगाना शायद मुश्किल है। उन्होंने सोचा था कि चार घंटा अगर कमरे में बंद कर देंगे, तो शायद इसका भ्रम टूट जाए। लेकिन अब उन्होंने अपनी रणनीति बदलने की बात सोची।

x x x

ओसवाल सिंघी परिवार में माँ करणी देवी की बहुत मान्यता थी। सरदारशहर से लगभग एक सौ साठ किलोमीटर दूर वही करणीमाता का मंदिर जो चूहों वाला मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर में हजारों चूहे देवी माँ के आस-पास घूमते रहते हैं। देवी माँ के सामने माथा टेक रहे नतमस्तक श्रद्धालुओं

की पीठ पर चूहों का चढ़ना आशीर्वाद-स्वरूप माना जाता है। वैसे यह जैन परिवार देवी माँ का अपार भक्त था। रूपा के दादा भीखमचंद अक्सर देवी माँ की भक्ति में डूब जाते थे मान्यता हो गई कि जब वे ध्यान लगाते तो उनके ऊपर देवी आती और सब कुछ बता देती हैं।

जयचंदलाल अंतिम अस्त्र के रूप में करणी माता की शरण में गये। रूपा संन्यास पथ पर जाये या न जाये, इसका फैसला देवी माँ के ऊपर छोड़ दिया। रूपा को साथ लेकर वह सीधे अपनी पुरानी हवेली पहुँचे, जहां उनके पिता यानी भीखमचन्द रहते थे। उन्होंने पिता जी के सामने सारी बात रखी कि रूपा मुनि दीक्षा लेने की जिद कर रहा है। दादा को सहसा पौत्र के जन्म पर पंडित की भविष्यवाणी याद आ गई कि यह योगी बनेगा। यह गृहस्थ जीवन में लिप्त नहीं होगा। यह एक नहीं, बल्कि तीन जन्मों से वैराग्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। इस जन्म में भी बाल्यकाल से साधु समाज में चला जाएगा... आदि-आदि। उन्हें एक दूसरे ज्योतिषी की बात भी याद आई। उसने भी बताया था कि यह बालक गृहस्थ में नहीं रहेगा। परिव्राजक होकर विद्यार्जन करेगा। शुभ कर्म करने वाला कीर्तिवान, उपदेशक मुनि, संन्यासी, ब्रह्मचारी और ज्ञानी धर्म प्रचारक होगा।

ज्योतिषी का एक-एक वाक्य भीखमचन्द के कानों में तेरह साल बाद ज्यों का त्यों गूँज रहा था। लेकिन वे बेटे और पोते की उलझन में फँस गए। बेटा जयचंदलाल नहीं चाहता था कि रूपा संन्यासी बने, लेकिन रूपा की नियति उसे संन्यास पथ पर ही ले जा रही है। वे अंतर्चक्षुओं से इस सत्य को घटित होता देख रहे थे। फिर भी जयचंदलाल के कहने पर उन्होंने देवी माँ का ध्यान लगाया। सत्य वे जानते ही थे कि 'कोई लाख करे चतुराई, करम का लेख मिटे न रे भाई।'

ध्यान-मुद्रा में वे अपने पोते रूपा को श्वेत वस्त्रधारी मुनि के रूप में विहार करते देख रहे थे। पर अभी तो एक नाटक था बेटे जयचंदलाल की खुशी के लिए। दस मिनट ध्यान लगाने के बाद उन्होने आँखें खोलीं और बोले-

'देवी माँ ने आदेश दिया है कि रूपा के लिए गृहस्थ जीवन में रहना ही शुभकर है, वह संन्यास-पथ पर नहीं जायेगा...।'

जयचंदलाल और रूपा उनका मुँह ताक रहे थे। उनकी बात सुनकर जयचंदलाल को संतोष हुआ। उन्होंने तिरछी नजर से रूपा की ओर प्रश्न की मुद्रा में देखा। रूपा गौर से दादा जी की मुख-मुद्राओं को पढ़ रहा था। वह बोला-

'दादा जी आप जो कुछ कह रहे हैं, वह

देवी माँ ने नहीं कहा, वह देवी माँ का आदेश नहीं है। आपने पिता जी को खुश करने के लिए ऐसा कहा है।...' इससे आगे रूपा कुछ और बोलता कि दादा जी के होठों पर मुस्कान तैर गई। बोले – 'रूपा तू ठीक कह रहा है...।'

रूपा कुछ देर वहां रुका। फिर पिता-पुत्र को बात करते छोड़ आया।

भीखमचन्द ने जयचंदलाल को उस सत्य से अवगत कराया, जिसे वे पिछले तेरह साल से छिपाते आ रहे थे। रूपा के जन्म के दो-तीन दिन बाद ज्योतिषियों ने इसके ग्रह-नक्षत्रों की गणना कर जो भविष्यवाणी की थी, वह पहली बार उन्होंने जयचंदलाल को बताई। 'तो क्या मैं किसी भी तरह नियति को टाल नहीं सकता?' भारी मन से जयचंदलाल पुरानी हवेली से उठे। उनके समक्ष अजब धर्म संकट खड़ा हो गया था। यहां से वह सीधे कन्हैयालाल दूगड़ जी के पास गये, जो हस्तरेखा विशेषज्ञ थे। अपनी उलझन जब उन्होंने कन्हैयालाल जी के सामने रखी तो उन्होंने कहा–

'मैंने रूपा की हाथ और पैर की रेखाएं देखी हैं। सच है कि यह घर में रहने वाला जीव नहीं है। आज नहीं तो कल यह गृह-त्याग करेगा।'

जयचंदलाल को सब जगह अपनी आशा के विपरीत दूसरे ही सच का सामना करना पड़ रहा था। बाहर से भले ही वह तमाम दिनचर्याओं में जुटे रहते थे, जिनमें गधैया जी के नोहरे में जाकर संत-सेवा भी शामिल थी, लेकिन मन बड़ा उद्विग्न था। उन्हें रूपा का दीक्षा लेना अवश्यम्भावी लगने लगा था, फिर भी मन इस सच को स्वीकार करने के लिए तैयार न था।

घर में जयचंदलाल के अलावा रूपा की दीक्षा का ज्यादा विरोध था तो रूपा के सबसे बड़ा भाई शुभकरण का। जब उन्हें रूपा की मंशा पता चली तो बिफर उठे। इतने धार्मिक प्रवृत्ति वाले परिवार में रहते हुए भी वे मुनियों-संतों के समर्थन में नहीं थे। शुभकरण अक्सर व्यापार की गतिविधियों में व्यस्त रहते घर में ज्यादा दखल नहीं देते थे। उन्हें रूपा की मंशा का पता चल गया था, लेकिन इस बारे में उन्होंने पिताजी से कोई बात नहीं की। मन ही मन रूपा के प्रति नाराजगी से भरे हुए थे।

रूपा के प्रसंग को लेकर डेढ़ महीना बीत चुका था। जयचंदलाल का विरोध अब भी जारी था। रूपा का संकल्प अडिग था। जयचंदलाल को बार-बार मुनि सोहनलाल की बात याद आती। वे अक्सर रूपा के बारे में कहते– 'यह ऊँचा संत बनेगा। यदि यह संत बनना चाहे तो मना मत करना।'

जयचंदलाल को लगने लगा था शायद

नियति उनकी अपनी मंशा के विपरीत जा रही है। वे नियति को स्वीकार करने का मन बनाने की कोशिश में थे। तमाम आशंकाएं उनको घेरे हुए थीं। उन्हें लगता था कि रूपा भावुकता में निर्णय ले रहा है। अभी इसे संत होने का अर्थ भी नहीं मालूम। अभी इसमें संन्यास का आकर्षण है। कल ऐसा न हो कि यह भटक जाए और पुनः गृहस्थ जीवन में लौट आए। अगर ऐसा हुआ तो वह ज्यादा खराब होगा।

रूपा घर में तनाव अनुभव कर रहा था। लेकिन पिता जी के सामने पड़ने से कतराता था। जयचंदलाल भी उससे दूरी बनाने की कोशिश करते।

रूपा को यह समझ में नहीं आ रहा था कि संतों-मुनियों के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले पिताजी उसे इस राह पर जाने की अनुमति क्यों नहीं दे रहे? वह यह भी जानता था कि पिताजी मंत्री मुनि की सेवा में किस प्रकार तत्पर रहते हैं। उनकी बात को वह किसी भी तरह टालेंगे नहीं। रूपा को पिताजी से अपनी बात मनवाने के लिए अंतिम अस्त्र के रूप में मंत्री मुनि नजर आ रहे थे। वह दो-तीन दिन तक लगातार मंत्री मुनि के पास गया। इधर-उधर की चर्चा के बाद अपने मन की बात रखी। अनुभवी मंत्री मुनि रूपा के अंतर्मन की दृढ़ता को समझ गए। जब रूपा ने बताया कि पिता जी अनुमति नहीं दे रहे और उनकी अनुमति के बिना दीक्षा संभव नहीं, तब मंत्री मुनि ने उसे आश्वस्त किया कि वे स्वयं इस बारे में जयचंदलाल से बात करेंगे।

x x x

-क्रमशः

स्वामी विवेकानंद के अनमोल कथन

• उठो मेरे शेरो, इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, स्वच्छंद जीव हो, धन्य हो, सनातन हो, तुम तत्व नहीं हो, ना ही शरीर हो, तत्व तुम्हारा सेवक है तुम तत्व के सेवक नहीं हो।

• ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हमीं हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अन्धकार है!

• किसी की निंदा ना करें, अगर आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं, तो जरुर बढाएं। अगर नहीं बढ़ा सकते, तो अपने हाथ जोड़िये, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिये, और उन्हें उनके मार्ग पे जाने दीजिये।

मन्त्र ही मन्त्र

○ साध्वी मंजुश्री

धन-प्राप्ति मन्त्र

ऊँ ह्रीं णमो अरिहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का नित्य प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल बत्तीस बार मन में ही ध्यान करें। इससे सब प्रकार की सुख-समृद्धि और धन का लाभ होता है।

सरस्वती महाविद्या

''ऊँ ह्रीं चउदसपुव्वीणं, ऊँ ह्रीं पयानुसारीणं, ऊँ ह्रीं एगारसंगधारीणं, ऊँ ह्रीं उज्जुमईणं, ऊँ ह्रीं विपुलमईणं स्वाहा''।

''महाविद्या-तीर्थकर-गणधर-प्रसादात् एष योगः फलतु' ऐसा बोल कर छह महीने तक उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपें। इससे बुद्धि तीव्र होती है, और स्मरण-शक्ति भी बढ़ती है।

सम्पादन महाविद्या

ऊँ ह्रीं बीय बुद्धीणं, ऊँ ह्रीं कोट्ठ-बुद्धीणं, ऊँ ह्रीं संभिन्नसोयाणं, ऊँ ह्रीं अक्खीणं महाणसलद्धीणं सध्वलद्धीणं, नमः स्वाहा।

यह महाविद्या अट्ठमभक्त (तेला) करके साढ़े बारह हजार बार जपें। जाप पूर्ण होने के बाद एक सौ आठ बार नित्य जपता रहे। जाप पीली माला से जपना चाहिए। इससे इच्छित कार्य शीघ्र सफल होता है।

दीपावली मन्त्र

ज्ञातव्य- दीपावली के दिन उपवास रखें, शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पालें। पहली आधी रात तक 'नमोत्थुण समणस्स भगवतो महावीरस्स' इस मन्त्र की माला फेरें और आधी रात के पश्चात् सूर्योदय तक 'ऊँ णमो भगवतो गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणमहाणस्स'- इस मन्त्र का जाप करें। 'लक्ष्मी की प्राप्ति हो, सब प्रकार से आनन्द हो।'

लोगस्स का कल्प

एँ ओम् ह्रीं श्रीं एँ लोगस्स उज्ज्योयगरे, धम्मतित्थयरे, जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं चउव्वीसं पि केवली- मम मनस्तुष्टि कुरु करु ऊँ स्वाहा।

विधि- इस मन्त्र को पूर्व दिशा की ओर मुख करके सूर्योदय के समय खड़ा होकर 'काउस्सग्ग' के रूप में 108 बार मौन सहित जपें। दिन में एक बार भोजन करें। ब्रह्मचर्य से रहें, भूमि पर या पट्टे पर सोएं। निरन्तर चौदह दिन तक जप करने से मान-सम्मान बढ़ता है, धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है और सब प्रकार का संकट दूर होता है।

मौन क्यों रह गए बुद्ध और राम

○ आशिमा भट्ट

काउंसलिंग के दौरान अक्सर प्रेमिकाएं/पत्नियां एक बात कहती पाई जाती हैं कि 'उसने मुझे तब छोड़ा जब मुझे उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मैंने उसे इतना प्यार किया, उसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?' पति या प्रेमी कब भगोड़े नहीं थे? गौतम बुद्ध तब भागे जब उनकी पत्नी यशोधरा नवजात शिशु की मां थी। राम ने सीता का त्याग तब किया जब सीता गर्भवती थी। कुंती ने जब सूर्य से कहा कि 'आपके प्रेम का प्रताप मेरे गर्भ में पल रहा है' तो सूर्य बादलों में छुप गए। फिर भी बुद्ध 'भगवान' कहलाए और राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम'। और तो और, कर्ण भी अपने बाप से सवाल पूछने के बजाय कुंती से ही पूछते हैं- 'आपने मुझे जन्म देते ही गंगा में प्रवाहित कर दिया, फिर कैसी माता?' यह नहीं सोचा कि अगर उनके महान पिता सूर्य देवता उन्हें अपना नाम देते तो कोई भी कुंती कर्ण को कभी खुद से अलग नहीं करती।

महिलाएं कई बार शादी से पहले मां बन जाती हैं क्योंकि उनके विवाहित प्रेमी उन्हें झांसा देते हैं कि कुछ ही दिनों में उनका तलाक होने वाला है। अपने बच्चे को पिता के नाम का हक दिलाने के लिए लड़ रही ऐसी महिलाएं कहती हैं- 'वह पुरुष है, कह सकता है कि उसका बच्चा नहीं है। लेकिन मैं तो मां हूं। नौ महीने बच्चे को पेट में रखा। पूरे समाज ने मुझे पेट फुला कर घूमते देखा है। मैं कैसे कह दूं कि बच्चा मेरा नहीं है।' ऐसे सवाल जब-जब उठते हैं, सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि क्या वाकई स्त्री की स्वायत्तता और अस्मिता तब तक निर्धारित नहीं होती जब तक उसे पुरुष का संरक्षण न मिले? समाज में सम्मानपूर्वक जीने के लिए उसे किसी न किसी पुरुष का नाम अपने साथ पति के रूप में 'टैग' करना ही पड़ेगा? क्या आधी आबादी का विकास यहीं आकर रुक गया है? सबसे पहला पक्ष तो सामाजिक और आर्थिक है, जिस पर बहुत बातें हो चुकी हैं। पढ़ी-लिखी, स्वावलंबी

स्त्रियां भी ऐसी परिस्थितियों के आगे लगभग गूंगी हो जाती हैं।

स्त्री विमर्श का नारा लगाने वाली औरतें भी कभी-कभी पक्षपात करती दिखाई देती हैं। जब किसी स्त्री का स्वाभिमान और सम्मान खतरे में हो तो 'स्त्री विमर्श' वाली ऐसी बुद्धिजीवी स्त्रियां भी उन पुरुषों के पक्ष में खड़ी पाई जाती हैं जिनका समाज में रुतबा है। पद्मश्री रीता गांगुली (गजल गायिका और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में संस्कृत नाटक के मंचन से संबद्ध) ने एक बार मुझे कहा- 'अब तुम शकुंतला का रोल बखूबी कर सकती हो।' मैंने पूछा, 'क्यों?' उन्होंने कहा कि 'अब तुम परिपक्व हुईं। पति ने तुम्हें छोड़ दिया। समाज ने नकार दिया। तुम अपने अस्तित्व के लिए, अपनी पहचान के लिए लड़ रही हो। अब तुम्हारे स्वाभिमान पर आन पड़ी है।'

शकुंतला की कहानी सबको मालूम है। राजा दुष्यंत ने उसे जंगल में देखा और उससे प्रेम विवाह किया। फिर शकुंतला गर्भवती हुई। इस बीच दुष्यंत राजधानी लौट गए। जब शकुंतला उनसे मिलने पहुंची तो राजा ने उसे पहचानने से इनकार कर दिया। कथा यह है कि ऐसा ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण हुआ। जो भी हो शकुंतला को परित्यक्ता की तरह रहना पड़ा। यही हाल सीता का भी हुआ। एक आम नागरिक के कहने पर राम ने लोकापवाद का हवाला देकर अपनी गर्भवती पत्नी सीता को वनवास दे दिया, जबकि इससे पहले वे उनकी अग्निपरीक्षा ले चुके थे। काफी समय बाद सीता ने अकेले दम पर पाले गए अपने पुत्रों को उनके पिता को सौंप दिया और स्वयं धरती में समा गईं। आत्महत्या की तरफ इशारा करने वाली इस घटना के जरिये उन्होंने यही संदेश दिया- 'मर जाऊंगी, लेकिन तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी, क्योंकि जब समाज मुझपर उंगली उठा रहा था तब तुमने मेरे साथ खड़े होने की बजाय मुझे जंगल में भेज दिया।'

शकुंतलापुत्र भरत जब शेर के मुंह में हाथ डालकर उसके दांत गिन रहा था, तो दुष्यंत को लगा कि जरूर यह किसी राजवंश का उत्तराधिकारी है। उन्होंने भी शकुंतला से अपने पुत्र को यह कहकर ले लिया कि यह तो मेरा बेटा है, इसलिए राजमहल में रहेगा। शकुंतला ने पुत्र को तो सौंप दिया लेकिन उनके साथ स्वयं नहीं गई। यह एक स्वाभिमानी स्त्री का आत्मसम्मान था। वह उस पति को क्यों स्वीकार करे, जिसने उसे तब छोड़ दिया, जब उसे उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी? और बुद्ध तो सत्य, ज्ञान और शांति की खोज में निकले थे। क्या वे नहीं जानते थे कि अकेली औरतों की समाज में क्या दशा होती है? आज भी सवाल सिर्फ औरतों से पूछे जाते हैं। अकेली यशोधरा ने कैसे पाला

होगा अपने बेटे राहुल को?

एक बच्चे को पालने में मां और बाप दोनों की भूमिका होती है। अगर बच्चे का बाप नहीं है तो कोई बात नहीं, लेकिन अगर है तो वह अनाथ की तरह क्यों जिए? बुद्ध (ज्ञाता) कहलाने वाला पुरुष अपनी सोती हुई पत्नी और दूध पीते बच्चे को छोड़ कर किस ज्ञान की प्राप्ति के लिए निकला? जिनमें मूलभूत मनुष्यता और संवेदना भी नहीं, वे 'भगवान' कैसे हो गए? कहते हैं, एक बार यशोधरा बुद्ध के आश्रम में गईं और उनसे सवाल किया, 'आप तो बुद्धत्व प्राप्ति के लिए निकल पड़े। मेरा क्या? मेरे बारे में सोचा?' कहते हैं, बुद्ध के पास कोई उत्तर नहीं था, सिवाय मौन के। आज भी इन सवालों के जवाब में अधिकतर पुरुष और समाज मौन ही साधे हुए हैं। कितनी सीता, यशोधरा, कुंती और शकुंतला आज भी अपने स्वाभिमान और हक की लड़ाई लड़ रही हैं। और लड़ती रहेंगी, क्योंकि पुरुष आज भी स्वामी हैं, भगवान हैं। औरतों को उनके आगे हाथ ही जोड़ने पड़ते हैं।

चुटकुले

1. एक छात्र ने गणित के अध्यापक से कहा– सर! अंग्रेजी के अध्यापक तो अंग्रेजी में बातें करते हैं। आप भी गणित में बात क्यों नहीं करतें?
गणित अध्यापक– ज्यादा तीन पांच न कर फौरन नौ-दो ग्यारह हो जा, नहीं तो चार पांच रख दूगां तो छठी का दूध याद आ जाएगा।

2. अध्यापक ने रमेश से कहा– रमेश! सोना अधिक कहां होता है?
रमेश ने कहा– जी! जहां रातें अधिक लंबी होती है, वहीं सोना अधिक होता है।

3. औरत (दूध वाले से)– भईया कल तुम्हारा दूध बहुत खट्टा था।
दूध वाला– क्या करूं बहन जी कल मेरी भैंस ने चार-पांच नींबू खा लिये थे।

4. छोटा बच्चा (पिता से)– अब आपको गाय के लिए भूसा लाने की जरुरत नहीं।
पिता (बच्चे से)– क्यों? बच्चा– आज मास्टर साहब ने कहा कि मेरे सर में भूसा भरा हुआ है।

प्रस्तुति : ऋषि

व्यापारी से आदर्श राजा

बहुत समय पहले की बात है। कुछ व्यापारी जमुई से बरारी नगर की ओर जा रहे थे। उस समय यातायात के साथ नहीं थे। वे नौकरों के साथ पैदल चल रहे थे। बारह घंटे की यात्रा के पश्चात उन्हें नदी दिखाई दी। थकान के कारण उनका बुरा हाल था। नदी देखकर उनकी जान-में-जान आई। उन्होंने एक नाव किराए पर ली। उसमें सामान लादा और आगे की यात्रा पर निकल पड़े।

शाम ढलने लगी थी। मंद-मंद ठंडी हवा बह रही थी कि अचानक आकाश काले-काले बादलों से घिर गया। रह-रहकर बिजली चमकने लगी। देखते-ही-देखते चारों ओर घना अंधकार छा गया। वर्षा होने लगी। नदी की लहरें तेजी से नाव से टकराने लगीं। नाव लहरों पर कभी तेजी से ऊपर उठ जाती तो कभी नीचे आ जाती। अचानक एक तेज लहर नाव से आ टकराई और नाव उलट गई। उसमें सवार सभी यात्री नदी में डूबने लगे।

उसी नाव में रामेश्वर नाम का एक युवक भी था। वह बहुत साहसी युवक था। वह भी व्यापार के सिलसिले में बरारी जा रहा था। वह तैरना जानता था। उसके हाथ में टूटी नाव का लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा आ लगा। वह उसके सहारे तैरने लगा। तेज लहरों का सामना करते हुए वह आगे बढ़ता गया। अंततः वह किनारे पर जा लगा। उसे पता नहीं चला, वह कहां पहुंच गया है। थकान के कारण वह अचेत हो गया था।

उसकी आंख खुली तो सूर्योदय हो रहा था। वहा आंखें मलता उठ बैठा। उसने देखा चारों ओर से कुछ सैनिकों ने उसे घेर रखा था। उनके बीच एक तेजस्वी ब्राह्मण खड़े थे। वह कुछ कह पाता, तभी उस ब्राह्मण ने आदेश दिया- 'इस नवयुवक को ले चलो।' सैनिकों ने उसे उठाया और घोड़ागाड़ी में बैठाकर ले चले। ब्राह्मण उसके साथ ही बैठा था।

रामेश्वर ने ब्राह्मण से पूछा- 'मैं कहां

आ गया हूं? आप मुझे कहां ले जा रहे हैं?' ब्राह्मण ने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह गंभीर मुद्रा में बैठा रहा।

रामेश्वर परेशान हो गया। वह नदी में डूबने से तो बच गया था, पर अब न जाने किस विपत्ति में फंस गया था। वह मन-ही-मन भगवान को याद करने लगा। उसने संकल्प किया कि वह प्रत्येक संकट का साहस से सामना करेगा।

घोड़ागाड़ी ने एक भव्य महल में प्रवेश किया। घोड़ागाड़ी से उतारकर उसे सम्मानपूर्वक महल में ले जाया गया। ब्राह्मण ने उसे स्नान करने के लिए कहा। वह स्नान करके लौटा तो उसे पहनने के लिए सुंदर राजसी वस्त्र दिया गए। फिर उसे राजसभा में लाकर सिंहासन पर बैठा दिया गया।

तभी एक वृद्ध ने उसके सामने सिर झुकाते हुए पूछा- 'महाराज्! आपका क्या नाम है?'

'रामेश्वर!' युवक ने आश्चर्य से कहा।

उस वृद्ध ने कहा- 'महाराज रामेश्वर! आप इस समय साहीवाल राज्य मे हैं। इस राज्य की परंपरा के अनुसार आपको इस राज्य का राजा बनाया गया है। मैं अमरेंद्र इस राज्य का महामंत्री हूं।'

रामेश्वर के आश्चर्य का ठिकाना न था। उसे यह स्वप्न के समान प्रतीत हो रहा था। उसके मन की स्थिति का अनुमान लगाते हुए महामंत्री ने कहा- 'आप आश्चर्यचकित न हों। इस राज्य का राजा एक वर्ष तक शासन करता है। एक वर्ष के पश्चात उसे निकट की पहाड़ी पर छोड़ दिया जाता है। वह दुर्गम क्षेत्र है। वहां घने वन और हिंसक जानवर रहते हैं। तब हम नए राजा की तलाश करते हैं। उस दिन प्रातः राज्य की सीमा पर बने द्वार को खोला जाता है। द्वार खोलते ही जो पहला व्यक्ति हमें मिलता है, उसे ही राजा बनाया जाता है। हमारी परंपरा के अनुसार अब आप हमारे राजा हैं।'

रामेश्वर मुस्करा दिया। वह साधारण व्यापारी न रहकर अब राजा बन चुका था।

राजा बने के बाद रामेश्वर ने पहला कार्य उसे दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा करने का किया। उसने देखा, वह क्षेत्र सचमुच भयानक है। उसने उसे साफ करने का आदेश दिया। हजारों सैनिक और अन्य कर्मचारी वन को साफ करने लगे। सड़कों के किनारों पर खुले स्थानों में सुंदर-सुंदर भवनों का निर्माण किया जाने लगा। वहां सुंदर उद्यान बनाए जाने लगे। पहाड़ी पर बने मंदिर तक सीढ़ियां बनवाई गईं। मंदिर की मरम्मत कराकर उसे भव्य रूप दिया गया।

छह महीने में ही वहां नया नगर बस गया। उसका नाम आनंद नगर रखा गया।

रामेश्वर ने दिन-रात एक कर पूरे राज्य को आदर्श राज्य बना दिया। प्रजा की सुविधा के लिए समस्त सुविधाएं उपलब्ध

कराई जाने लगीं। चिकित्सालय खुल गए। जल और प्रकाश की सुव्यवस्था कराई गई। देखते-ही-देखते साहीवाल राज्य का रंग-रूप ही बदल गया।

एक वर्ष कब बीत गया, इसका पता ही न चला। रामेश्वर ने सभा बुलाई और महामंत्री से कहा- 'महामंत्री! मेरा शासनकाल पूरा हो गया है। अब मुझे जाने की अनुमति दें। राज्य की परंपरा के अनुसार आप नया राजा बना लें।'

महामंत्री ने हाथ जोड़ते हुए कहा- 'महाराज! समस्त मंत्रिगण, सभा के सदस्यों और प्रजा की ओर से मेरी प्रार्थना है कि आप आजीवन इस राज्य के राजा बने रहें। आप जैसा साहसी, कर्मवीर और दूरदर्शी राजा हमें आज तक नहीं मिला। आपने इस एक वर्ष में इस राज्य को विकासशील राज्य में बदल समृद्ध व शक्तिशाली बना दिया है।'

'हे, महाराज रामेश्वर! आप हमें छोड़कर नहीं जा सकते। आप ही हमारे राजा बने रहेंगे।' महाराज रामेश्वर के जयघोष से सभा-भवन गूंज उठा।

महाराज रामेश्वर ने हाथ जोड़कर कहा- 'मैं आप सबका अनुरोध स्वीकार करता हूं। आप सब इसी प्रकार अपने राज्य के विकास के लिए तन, मन, धन से कार्य करते रहिए।'

प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

लघु-कथा

मैं हिंदोस्तान हूँ

मैंने बड़ी हैरत से उसे देखा। उसका सारा बदन लहूलुहान था व बदन से मानों आग की लपटें निकल रही थीं। मैंने उत्सुकतावश पूछा, 'तुम्हें क्या हुआ है?'

'मुझे कई रोग लगे हैं, मजहबवाद, भाषावाद, निर्धनता, अलगाववाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता इत्यादि जिन्होंने मुझे बुरी तरह जकड़ लिया है। यह जो आग मेरे बदन से निकल रही है यह मजहबवाद और अलगाववाद की आग है। यदि जल्द ही मेरा इलाज न हुआ तो यह आग सबको भस्म कर देगी।' उसके दिल की वेदना चेहरे पर आ चुकी थी।

उसकी रहस्यमय बातों से मैं आश्चर्यचकित था। 'क्या अजीबोगरीब बातें करते हो! तुम हो कौन...?' मैंने पूछा।

'मैं हिंदोस्तान हूं!'

प्रस्तुति : मनीष जैन

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं औषधीय पौधे

हमारे शरीर को निरोगी बनाये रखने में औषधीय पौधों का अत्यधिक महत्व होता है। इससे प्राप्त होने वाली जड़ी-बूटियां चिकित्सकों द्वारा मानव रोगोपचार हेतु अमल में लाई जाती हैं।

यहीं नहीं, जंगलों में खुद-ब-खुद अगले वाले अधिकांश औषधीय पौधों के अद्‌भुत गुणों के कारण लोगों द्वारा इसकी पूजा-अर्चना तक की जाने लगी है जैसे तुलसी, पीपल, आक, बरगद तथा नीम इत्यादि। प्रसिद्ध विद्वान चरक ने तो हरेक प्रकार के औषधीय पौधों का विश्लेषण करके बीमारियों में उपचार हेतु कई अनमोल किताबों की रचना तक कर डाली है जिसका प्रयोग आजकल मानव का कल्याण करने के लिए किया जा रहा है। आयुर्वेद ने अनुसार, औषधीय पौधों के संपर्क में आने मात्र से ही व्यक्ति के अनेक प्रकार की कीटाणुओं का स्वतः नाश हो जाता है जबकि इससे निकलने वाली वायु से शरीर को काफी लाभ पहुंचता है और संपूर्ण वातावरण प्रदूषण रहित हो जाता है। कुल मिलाकर हम यहां कह सकते हैं कि यह समूचा पौधा ही हमारे उत्तम स्वास्थ्य हेतु अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसकी पत्तियां, तना, फल और जड़ सभी तरह से मानव रूपी जीवन में रोगों से निजात पाने के लिए बहुत जरूरी है।

परिणामस्वरूप, व्यक्ति औषधीय पौधों का इस्तेमाल करते हुए विभिन्न प्रकार के रोगों का उपचार करके स्वस्थ हो जाता है परंतु यहां ध्यान देने योग्य बात यही है कि इन सभी बहुमूल्य औषधीय पौधों से रोगों की चिकित्सा करना मुश्किल नहीं है अपितु उसकी पहचान करते हुए उपयोग की विधि को भली-भांति जानना अति अनिवार्य है।

<u>तुलसी</u>

संसार के विभिन्न औषधीय पौधों में तुलसी नामक पौधे में रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने की विशिष्ट शक्ति पायी जाती है क्योंकि तुलसी के पत्तों में पीलापन लिए हुए हरे रंग का तेल विद्यमान होता है, जो उड़नशील होता है। यह तेल पत्तियों से निकलकर धीरे-धीरे हवा में फैलने लगता है। फलस्वरूप, तुलसी के निकट आने वाली वायु जहां भी जाती है उसके संपर्क में आने वाले समस्त लोगों के स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम कहीं जाती है। तुलसी की पत्ती, तना और बीज व्यक्ति के गठिया, वीर्य वृद्धि, लकवा तथा वात दर्द में भी फायदेमंद होते हैं और मन की शांति का अहसास दिलाते हैं।

<u>काली एवं सफेद मूसली</u>

अपने शरीर को स्वस्थ व बलिष्ठ बनाये

रखने हेतु मूसली अति आवश्यक समझी जाती है। चिकित्सकों की राय में, मूसली की जड़ यौनवर्धक, वीर्यवर्धक तथा शक्तिवर्धक है जिससे व्यक्ति का शारीरिक कष्ट भी छूमंतर हो जाता है। इसलिए इस अनोखे पौधे के गुणों-अवगुणों की सटीक जानकारी रखनी चाहिए, तभी आप स्वयं को स्वस्थ रख पायेंगे, वरना कतई नहीं।

मुलहठी

हर्बल पौधों में मुलहठी की जड़ को सर्दी, सांसी, जुकाम, अल्सर जैसे रोगों के शमन हेतु अक्सर उपयोग में लाया जाता है जिससे इस समस्या से जूझ रहे लोगों को काफी आराम मिलता है। यदि आप भी उपरोक्त रोगों से चिंतित हैं तो समाधान के लिए इसकी जानकारी लेकर बखूबी इस्तेमाल कर सकते हैं। निस्संदेह, यह आपको चिंता से मुक्त कर देगी।

चमेली

फूलों की रानी कहलाने वाली चमेली की पत्ती एवं फूलों से सभी वाकिफ हैं किंतु मुंह के छाले और मासिक धर्म की रुकावट को दूर करने में यह बहुत ही सक्षम है। इसके लिए भी जन सामान्य में पहचान एवं उपयोग संबंधी जानकारी अति आवश्यक है।

शंखपुष्पी

पढ़ाई में कमजोर रहने वाले बच्चों के लिए शंखपुष्पी की पत्ती और तना बुद्धिवर्धक माने जाते हैं। सो, परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को सदैव शंखपुष्पी को प्रयोग में लेते हुए अपनी बुद्धि का अधिकाधिक विकास करना चाहिए जो हरेक लिहाज से उनके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

-योगी अरुण तिवारी

श्रम के फूल

धरती से लेकर अंबर तक,
मरघट से लेकर मंदिर तक।
इच्छाओं के यान उड़ाना,
चाहे श्रम के फूल खिलाना।
बिना लगन के संभव क्या है?

कल-कल विकास की नदियां,
रोक न पाएगी सदियां।
फौलादी हाथों में ढलकर,
हरा-भरा करते भू-हलधर।
बिना अमन के संभव क्या है?

वेद-ऋचाएं आज धरोहर,
ज्ञान-ध्यान सम्मान मनोहर।
ऋषि-मुनियों के अमर वचन हैं,
सूत्र, मन्त्र, श्लोक क्षमन हैं।
बिना हवन के संभव क्या है?

-बजेश भट्ट, जयपुर

मासिक राशि भविष्यफल- सितम्बर 2017

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार -व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में अच्छा और उत्तरार्ध में नेष्ट है। ये जातक अपने क्रोध पर काबू न रख पाने के कारण बना बनाया काम बिगाड़ लेंगे। अतः क्रोध पर काबू रखना श्रेयस्कर होगा। अपनी क्षमता से बढ़ कर कार्य करने से नुकसान होगा। परिवार जनों में सामन्जस्य का अभाव रहेगा।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते शुभ फल देने वाला है। आलस्य का त्याग करें। कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा इन जातकों का काम आसान हो जायेगा। वैसे शत्रु सिर उठाएगे पर ये जातक उन्हें हावी नहीं होने देंगे, पर आवश्यकता पड़ने पर समझौता करने में भी कोई बुराई नहीं है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में कुछ अच्छा और उत्तरार्ध में कुछ अशुभ फलदायक है। कुछ जातकों का इस माह रूका हुआ पैसा भी मिल जायेगा। कुल मिला कर अच्छे फल अधिक होगें। शत्रु सिर उठायेंगे पर ये जातक अपने आत्म विश्वास के बल पर सफल होंगे। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अस्थिरता का सूचक है। फिर भी अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक होंगे जिससे मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। यह ध्यान रखना होगा कि अपने आपको दूसरे की तुलना में अधिक प्रभावी मानने की गलती न करें।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। उत्तरार्ध में कुछ अच्छे फल देखने को मिल सकते है। शत्रु सिर उठायेंगे पर ये जातक उन पर अपना दबदवा बनाने में कामयाब होंगे। वैसे शनि इस माह यह राशि छोड़ रहा है। कुछ लोग अपने मकान आदि की मरम्मत में व्यस्त रहेंगे।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवराधों के चलते श्रमसाध्य आंशिक लाभ दिलाने वाला कहा जाएगा। इस माह कोई नई योजना बनाने में व्यस्त रहेंगे। जहां मित्र आपकी मदद करने को तत्पर रहेंगे, वहीं आप भी अपने मित्रों का सहयोग

करेंगे। कोर्ट-कचहरी का कोई फैसला आपके हक में हो सकता है। साझेदारी के कार्यों में सफलता मिलने के आसार हैं। परिवार में सामन्जस्य बनाये रखना होगा।

तुला- तुला राशि के लिए जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह बहुत सोच विचार कर चलने का है। अवरोधों के पश्चात जो आय होगी व्यय उससे भी अधिक सम्भावित है। कोई नया कार्य आरम्भ करना अच्छा नहीं है। संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। परिवार जनों में सामन्जस्य बिठाये रखना होगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध में अधिक शुभफल दायक है। कुछ जातकों को भूमि-भवन का लाभ होगा। कुछ जातक नये लक्ष्य बनांएगे और उन पर कार्य करेंगे। आलस्य को पास नहीं फटकने दें। क्रोध पर काबू रखें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रमसाध्य लाभ दिलाने वाला है। जिसका अधिक शुभ करेंगे उसके अनुरूप ही लाभ की आशा की जा सकती हैं, हालांकि अवरोध तो आयेंगे और शत्रु भी सिर उठायेंगे पर ये जातक उन पर काबू पा लेंगे। परिवार में सामन्जस्य बिठाकर चलना होगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य रहेगा। अधिक लाभ की आशा नहीं की जा सकती। वाद-विवाद से बचना श्रेयस्कर रहेगा। कुछ जातक नई योजनाएं बना सकते हैं। स्वार्थ परक नीति नुकसान देह साबित हो सकती है। मित्रों से अनबन हो जायेगी। किसी के मामले में अनावश्यक रूप से टांग न अड़ाएं, आलोचना के शिकार होंगे।

कुम्भ- कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक नहीं कहा जायेगा। आय से अधिक व्यय होगा। हाथ में पैसा आते आते रूक जायेगा। हर ओर निराशा दिखाई देने से आत्म विश्वास में कमी आयेगी। किसी नई योजना का क्रियान्वयन भी संभव नहीं है। केवल कुछ जातक नवीन वस्तुओं की खरीदारी करेंगे। परिवार में किसी समस्या के चलते मन खिन्न रहेगा।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। फिर भी माह का पूर्वार्ध उत्तरार्ध से अच्छा है। कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा पट जायेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति या मनचाही जगह की ट्रांसफर का लाभ मिल सकता है। कुछ जातक नई योजनाएं बनाने में लगे रहेंगे।

-इति शुभम्

अंध-विश्वासों और रूढ परंपराओ से धर्म को चाहिए आजादी

लॉस एंजिलस, केलिफोर्निया, अमेरिका में 15 अगस्त 2017 को अपने एक विशेष प्रवचन में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- शताब्दियों की गुलामी के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत को विदेशी शासकों से आजादी मिली। तब से लेकर आज तक भारत ने सभी दिशाओं में प्रशंसनीय प्रगति की है। बहुत कुछ करना अभी बाकी भी है। किंतु जातिवाद और संप्रदायवाद से समाज और धर्म को आजादी मिलने की दिशा में नगण्य प्रगति हुई है, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। बल्कि इनका उपयोग वोट की राजनीति के लिए होने के कारण सोच की कट्टरता से धर्म और समाज का बहुत नुक्शान ही हुआ है। मैं बचपन से ही धर्म-क्षेत्र से जुड़ा हूं। इसलिए इसी की चर्चा विशेषतः करना चाहूंगा। मुझे लगता है विश्वास और श्रद्धा के नाम पर अंध-विश्वास ओर अंध-श्रद्धा दिन-दिन बढ़ती जा रही है। परंपरा के नाम पर जड़ क्रियाओं और दंभपूर्ण समाचारी का विस्तार हो रहा है। मंदिरों ओर धर्म-स्थानों के नाम पर अपने-अपने वैभव-प्रदर्शन के आयोजन सारी सीमाएं पार कर रहे हैं। और इन सबकी चकाचौंध में जन-जन की आस्थाओं का दोहन किया जा रहा है-

एक दर्द भीतर ही भीतर कसक-कसक उठ आता है
नाम रोशनी का लेकर अंधेरा लाभ उठाता है।
गुरू-गद्दी की चमक-दमक में चालाकी से नेता-जन
कोई दाम कमाता है और कोई नाम कमाता है।

आपने कहा- गद्दीधारी गुरू-जन अपने-अपने पंथ और संप्रदाय की दीवारों को मजबूत करने के लिए गुरू-इंगित और फतवों द्वारा धर्म-भीरू समाज को गलत राहों पर ढकेल रहे हैं-

रोशनी की मशालें वे हथियाये हुए हैं
जिनके चारों ओर अन्धेरे छाये हुए हैं
छुपाये हुए हैं जो अपने असली चेहरों को
वे ही सिर पर आसमान उठाये हुए हैं

जिस धर्म का प्रयोजन है बंधनों से मुक्त करना, हर आत्मा की स्वतंत्रता का रास्ता प्रशस्त करना। उनके धर्म-नेता, गुरू-दृष्टि के नाम पर शिष्यों/अनुयायियों पर चारों ओर से बंधनों पर बंधन डाल रहे हैं। जो पंथ-मुक्त संत का जीवन जी रहे हैं उनसे संपर्क नहीं रखना, उनके प्रवचन नहीं सुनना, उनके भजन और मुक्तक/कवितायें काम में नहीं लाना, उनसे संपर्क रखनेवालों को संघ की सभी संस्थाओं से हटा देना- जैसे तालीबानी फरमान क्या हमें वीतराग-धर्म की आराधना की प्रेरणा देते हैं? हमें यह समझना जरूरी है गुरू का काम

है शिष्य को आत्मा/परमात्मा से जोडे, न कि पंथ और संप्रदाय से। इसलिए प्रबुद्ध व्यक्तियों को आगे आकर संकल्प करना होगा-

धर्म को पंथ का गुलाम नहीं होने देंगें
सच को झूठ के हाथों बदनाम नहीं होने देंगे
हिम्मत के साथ संकल्प लें किसी कीमत पर
रोशनी को अंधेरे के हाथों नीलाम नहीं होने देंगे।

ऐसा होने पर ही धर्म-जगत पर अध्यात्म सूर्य का उदय हो सकेगा-

सूरज की अगुवानी के लिए तैयार हो जाएं
थोड़ी-थोड़ी कुर्बानी के लिए तैयार हो जाएं
अंधेरे ने बहुत बदनाम किया है रोशनी को
थोड़ी-थोड़ी बदनामी के लिए तैयार हो जाएं

आपने कहा- पंथ और संप्रदाय की कट्टर सोच से मुक्त होकर ही हम धर्म-चेतना का अनुभव ले सकेंगें, आत्मा-परमात्मा की सही आराधना कर सकेंगें-

अगर हमें परमात्मा को आराधना है
तो किसी भी खूंटे से नहीं बांधना है
बहते रहना है मस्त दरिया की तरह
यह मस्ती ही सबसे बड़ी साधना है।

आपने कहा- पंथ / संप्रदाय-मुक्त वीतराग-मार्ग की आराधना का अनुभव हमें विदेश की धरती पर होता है। सौभाग्य से इस धरती पर संप्रदाय-पीडित चित्त वाले आचार्यों/संत-पुरूषों के चरण-कमल नहीं पड़े हैं। अपने-अपने प्रचारकों के माध्यम से पंथ-प्रचार की कोशिशों के बाबजूद यहां के संप्रदाय-मुक्त समाज ने उन्हें अस्वीकार कर दिया है। इतना ही नहीं उन प्रचारकों को भी अपनी स्वीकार्यता के लिए विशुद्ध धर्म-चर्चा की सीमाओं में रहना पड़ता है। यहां की स्पष्ट उद्घोषणा है-

पंथ की नहीं, संत की बात कीजिए
वैर-विरोध के अंत की बात कीजिए
मजहब ने बनाया है जीवन को पतझर
अब हरे-भरे बसंत की बात कीजिए

<u>पूज्यवर की विदेश-यात्रा</u>

पूज्य आचार्यवर के सप्त-दिवसीय वरमोंट-प्रवास के बीच शिष्य योगी अरुण का तीन-दिनों के लिए अमेरिकन ब्राह्मण समाज के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने डिट्रायट महानगर जाना हुआ। योगी अरुण की प्रभावकारी योग-कक्षाएं सीनियर्स के साथ-साथ युवाओं के बीच भी रहीं। सभी ने पूज्यवर के कार्यक्रमों के अपनी जिज्ञासाएं तथा विनम्र भावनाएं प्रकट की।

अगस्त के प्रथम सप्ताह में ह्युष्टन-टेक्सास तथा दूसरे सप्ताह में लॉस एंजिलिस, केलिफोर्निया में पूज्य गुरूदेव का प्रवास रहा। सर्वत्र अध्यात्म-चर्चा तथा योगाभ्यास के प्रेरणादायी कार्यक्रम रहे। इनकी निरंतरता बनी रहे, इस दिशा में भी पूरी गंभीरता से समाज सोच रहा है। न्यूयार्क, न्यूजर्सी, वरमोंट,टेक्सास-ह्युष्टन, लॉस एंजिलस, सेनूफ्रेंसिस्को, केलिफोर्निया, अमेरिका के ऐसे राज्य हैं जहां मानव मंदिर

मिशन विचार-धारा के लिए उपजाऊ जमीन बिल्कुल तैयार है। बस उस फसल के लिए विधि-सम्मत बीज बोने की जरूरत है। ह्युष्टन-प्रवास को सफल बनाने में श्री वीरेन्द्र प्रशांत कोठारी, श्री प्रवीण लता मेहता, डॉ. रवि ज्योति कांकरिया, श्री भूपेश प्रीति सेठ, श्री परिमल प्रतिमा शाह, श्री किशोर कल्पना दोषी, आदि परिवारों की विशेष सेवायें रहीं। लॉस एंजिलस-प्रवास को सफल बनाने में श्री सुनील आशा डागा, श्री हरीश सुनीता डागा, श्री नरेन्द्र रीटा पारसान, श्री रोहित ऋतु जैन, श्री योगेश संगीता शाह आदि परिवारों की प्रशंसनीय सेवाएं रहीं। दिनांक 16 अगस्त 2017 को पूज्य गुरूदेव शिष्य अरुण योगी के साथ पर्युषण आराधना के लिए मिल्पिटास जैन सेंटर, सैन् होजे, सेन् फ्रेंसिस्को पधार गए, जहां सर्व-सम्मान्य नेता श्री प्रवीण नीरज जैन ने आपकी अगुवानी की।

<u>अमेरिका में पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में आत्म-स्पर्शी पर्युषण-आराधना</u>

मिल्पिटस जैन सेंटर, सेन् फ्रेंसिस्को, केलिफोर्निया, अमेरिका में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी के सान्निध्य में हजारों की संख्या में जन-समुदाय ने पर्युषण-महापर्व की आत्म-स्पर्शी आराधना की। प्रातः पांच बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक पवित्र भावनाओं से ओत-प्रोत प्रभु-पूजाएं, प्रातः तथा रात्रि में जैन-धर्म-दर्शन, इतिहास परंपरा, क्षमा-मैत्री की निर्ग्रन्थ साधना, जड़-क्रियाओं और संप्रदाय-मुक्त धर्म विवेचना, दान-तप की महिमा, शरीर और आत्मा की भिन्नता, भगवान पर्श्वनाथ का कुंडलिनी योग-ध्यान, भगवान महावीर की तत्कालीन समाज में अहिंसा-प्रतिष्ठा, सामायिक प्रतिक्रमण का महत्व आदि विषयों पर पूज्य गुरूदेव के घंटों-घंटों आत्म-स्पर्शी प्रवचनों में उपस्थित जन-समुदाय जैसे भाव समाधि में उतर जाता। पूज्यवर के प्रवचनों के पश्चात् शिष्य योगी अरूण का विलक्षण योग-प्राणायाम-ध्यान प्रशिक्षण जैसे सोने में सुगंध। साधारणतया योगाभ्यास का अर्थ स्वास्थ्य लाभ के रूप में लिया जाता है। किंतु पूज्य गुरूदेव के मार्ग-दर्शन में योगी अरूण ने अपने विशेष रिसर्च-प्रयासों से इसे ध्यान और कुंडलिनी जागरण के अनुभव से जोड़ दिया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। सेन् होजे, फ्रीमोंट और मिल्पिटस जैन समाज ने तो भरभूर आत्म-लाभ कमाया ही, भारत से दिल्ली, इन्दौर, मुम्बई आदि शहरों से समागत बन्धुओं ने गद्‌गद् स्वरों में कहा- ऐसी पर्युषण-पर्व आराधना का अवसर हमें भारत में अपने शहरों में भी देखने को नहीं मिलता है।

पर्युषण-आराधना के प्रति लोगों के दिलों में उमड़ता उल्लास-उत्साह का अंदाजा इसी

से लगाया जा सकता है कि यहां के जैन समाज में इस वर्ष 80 अठाई तप की आराधना हुई है। तेले आदि की तपस्या तो गणना में ही नहीं है। भगवान-महावीर जन्म-वाचन तथा अन्य प्रवचनों में तीन-चार हजार तक की उपस्थिति, हजारों सामूहिक प्रतिक्रमण एवं हृदय-स्पर्शी क्षमा-धर्म का आदान-प्रदान, तपस्वियों के तप का सामूहिक पारणा आदि मनोरम दृश्य देखते ही बनते थे। नवम्बर माह में योगी अरूण के निर्देशन में तीन-दिवसीय योग-ध्यान रिट्रीट का निर्णय भी सेंटर ने लिया है। इस प्रकार मिल्पिटस जैन सेंटर, सेन् फ्रेंसिस्को में पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में इस वर्ष की पर्युषण-आराधना एक कीर्तिमान बन गई है। इस पर्व-आराधना को सफल बनाने में जैन सेंटर के पदाधिकारियों/स्वयं सेवकों की विशेष सेवायें रही हैं ही, सर्व सम्माननीय समाज-सेवी डॉ. प्रवीण नीरज जैन का प्रशंसनीय योग-दान विशेष उल्लेखनीय है।

पर्युषण आराधना के पश्चात् पूज्यवर का कनाडा-पदार्पण हुआ। धर्म-परायण श्री चन्दू भाई रंजनाबेन मोरबिया ने कनाडा का प्रवेश-द्वार विंडसर शहर पूज्य गुरूदेव की अगुवानी की। 1-3 सितम्बर का तीन दिवसीय प्रवास लंदन ऑटेरियो में रहा। यहां Indian Cultural Center में पूज्यवर का विशेष प्रभावशाली प्रवचन रहा। श्री अमृत किरण नाहटा परिवार पूरे श्रद्धा-भाव से पूज्यवर के प्रवास को सफल बनाने में अपना योग-दान देता है। 4 से 7 सितम्बर टोरंटो में श्री हिम्मत भाई खंडोर तथा श्री ललित भाई पांसर की प्रशंसनीय सेवाओं से पूरे समाज को प्रवचन-योगाभ्यास का लाभ मिलता है। इस प्रकार 2 माह और 10 दिन की धर्म-प्रभावनामयी विदेश यात्रा संपन्न करके पूज्य गुरूदेव शिष्य योगी अरूण के साथ भारत की राजधानी दिल्ली पधार गए, जहां पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी ने अपनी सहयोगी साध्वियों तथा मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों के साथ हार्दिक स्वागत किया।

मानव मंदिर मिशन, जैन आश्रम, नई दिल्ली में पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी के मार्ग दर्शन में मानव मंदिर गुरूकुल तथा सेवाधाम हॉस्पिटल प्रशंसनीय प्रगति पर है। सहयोगी साध्वियां तथा समर्पित स्टाफ-कार्यकर्तागण पूरी जिम्मेवारी से अपनी सेवायें दे रहे हैं। सावन-पूर्णिमा रक्षा बंधन पर्व गुरूकुल के बच्चों ने साध्वी समताश्रीजी की अगुआई में दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल केजरीवाल के साथ आत्मीय वातावरण में मनाया। 15 अगस्त, स्वतंत्रता-दिवस को आश्रम परिसर में पूज्या महासती मंजुलाश्रीजी के सान्निध्य में गुरूकुल के बालकों तथा स्टाफ सदस्यों ने देश-भक्ति के वातावरण में हर्ष-उल्लास के साथ मनाया।

स्मृति-संबल

(1) <u>सरल स्वभावी श्रीमती लिछमीबाई दूगड का स्वर्गवास</u>

धर्म-मर्मज्ञ श्री संपतमलजी दूगड की धर्म-पत्नी सरल स्वभावी श्रीमती लिछमीबाई दूगड का पिछले दिनों स्वर्ग-वास हो गया। यों तो बीमारियां समय-समय पर श्रीमती लिछमीबाई के धैर्य की परीक्षा लेती रहती थी, किन्तु इस बार की बीमारी में भरपूर चिकित्सा-प्रयासों के बाद भी उनको परलोक-यात्रा से बचाया नहीं जा सका। श्रीमती लिछमीबाई पूज्य गुरूदेव की संसारपक्षीय भांजी थी।

अपने संवेदना-संदेश में पूज्यवर ने कहा- श्रीमती लिछमीबाई का जीवन धर्म-परायण था। रूग्ण-अवस्था में भी वे समता-भाव से कर्म-निर्जरा का ख्याल रखती थी। श्री संपतमलजी लिछमीबाई जैसी सकारात्मक सोच कम देखने को मिलती है। सुपुत्र सुरेन्द्र, नवीन तथा सुपुत्री सुधा को भी उन्होंने ऊंचे संस्कार दिए हैं। वियोग की इस घड़ी में पूरा परिवार मोह-शोक से दूर रहते हुए उनके आत्म-गुणों की विरासत को आगे बढाए, यही प्रेरणा है। दिवंगत आत्मा की ऊर्ध्व-गति और बंधन-मुक्ति की मंगल कामना। मानव मंदिर मिशन तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की भाव भरी श्रद्धांजलि।

(2) <u>श्री पवनचंद जैन का दु:खद देहावसान</u>

दिल्ली मयूर बिहार, श्री सुधीर चन्द जैन, श्री पवनचंद जैन आदि सात भाइयों का भरा पूरा परिवार। सभी भाइयों का अनुकरणीय परस्पर प्यार, साधन-संपन्न संस्कारवान परिवार, समाज में मान-सम्मान प्रतिष्ठा/प्रभाव, पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा मानव मंदिर गुरूकुल को श्रद्धा समर्पित सेवाएं। पिछले 2 वर्षों में जैसे इस परिवार को क्रूर काल की नजर लग गई। सबसे पहले सेवाभावी सूझबूझ के धनी श्री सुधीर चन्द जी जैन रात्रि में सोये-सोये ही लम्बी नींद में चले गए। उसके थोड़े महिनों पश्चात् विनीत पुत्रों अक्षय अनुज की अथक चिकित्सा के बावजूद कैंसर-पीडित मां रेणू जैन नहीं बच पाई। परिवार उस मृत्यु शोक से उबर ही नहीं पाया था कि छोटे भाई श्री पवनचन्दजी जैन की युवा धर्म-पत्नी श्रीमती रीटा जैन हल्के-से हृदय आघात से ही काल-धर्म को प्राप्त हो गई। और अब श्री पवनचन्दजी जैन स्वयं इस संसार से विदा हो गए। जबकि देहावसान होने का कोई कारण प्रकट नहीं था। मामूली-सी गांठ का डॉक्टर ने ऑपरेशन किया। शल्य-क्रिया में कहीं चूक रही होगी, सारे शरीर में इन्फेक्शन फैल गया। हजार कोशिश करने पर भी मृत्यु-मुख से कोई बचा नहीं सका। पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या महासतीजी ने परिवार-जनों को सान्त्वना प्रदान करते हुए कहा- मोह-शोक से दूर रहते हुए सबको प्रेरणा लेना है मृत्यु की तिथि कभी आ सकती है। इसलिए शुभ कार्य और धर्म-आराधना कल पर न छोड़ें। भगवान महावीर की वाणी पर अपना मन टिकायें। और दिवंगत आत्मा के गुणों का स्मरण करते हुए अपनी यशस्वी विरासत को ऊँचाइयों तक ले जाएं। रूपरेखा पत्रिका परिवार तथा मानव मंदिर मिशन की दिवंगत आत्मा को भाव भरी श्रद्धांजलि।

–श्री प्रवीण एवं लता मेहता के आवास पर पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचंद्रजी महाराज के प्रवचन को बड़ी तन्मयता से सुनते शुगर लैंड, ह्युस्टन अमेरिका का स्वाध्याय-ग्रुप।

–श्री किशोर कल्पना दोसी के आवास पर पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज का प्रवचन सुनते हुए स्वाध्याय-ग्रुप। साथ में हैं योगी अरुण तिवारी (ह्युस्टन, टेक्सस, अमेरिका)

-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज से मंगल-मंत्रो का श्रवण करते हुए जैन सेंटर मिल्पीटस, सन होजे, अमेरिका का श्रावक समाज। साथ में हैं शिष्य योगी अरुण।

-पर्यूषण महापर्व के अवसर पर ध्यान, साधना व आहार विज्ञान पर योगी अरुण को सुनते तपस्वी जन। परिसर जैन सेंटर ऑफ नोर्थ कैलिफोर्निया, मिल्पीटस, सन होजे, अमेरिका।

-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज जैन मंदिर, कोरोना, लॉस ऐंजेलेस, अमेरिका में अपना प्रवचन करते हुए। साथ में हैं शिष्य योगी अरुण।

-श्री चंदूभाई एवं रंजना बहन मोरबिया के आवास पर स्वाध्याय ग्रुप को आशीर्वाद प्रदान करते पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज। साथ में हैं शिष्य योगी अरुण (विंडसर-आंटेरीओ, कनाडा)

-सेवाधाम प्लस द्वारा आयोजित निःशुल्क सलाह व सुझाव कैम्प में परामर्श देते हुए साध्वी समताश्री जी एवं एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ अमित जैन।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

–पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी महाराज के सान्निध्य में मानव मंदिर गुरुकुल के छात्रों, मानव मंदिर मिशन व सेवाधाम स्टाफ ने स्वतंत्रता दिवस समारोह मानव मंदिर परिसर, नई दिल्ली में मनाया।

–दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद जी केजरीवाल ने मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चों के साथ रक्षाबंधन उत्सव मनाया साथ में हैं– साध्वी समताश्रीजी व मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चे तथा स्टाफ–जन।

–ब्राह्मण समाज आफ नार्थ अमेरिका के वार्षिक अधिवेशन में योगी अरुण तिवारी, सुभाष चंद्र तिवारी आदि को सम्मानित करते हुए ब्राह्मण समाज आफ नार्थ अमेरिका के अध्यक्ष–केशव शुक्ला, ममता तिवारी आदि, स्थान डिट्रोइट, अमेरिका।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया